IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियो के अभिभावकों का कोविड 19 महामारी के समय आयोजित ऑनलाइन शिक्षण की गतिविधियों के प्रति द्रष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन

***भावना चौधरी [एम.एड.छात्रा],**डॉ. राहुल सिरोही [सहायक आचार्य,शिक्षा विभाग]**
स्वामी विवेकानंद सुभारती विश्वविद्यालय , मेरठ ,उत्तर प्रदेश

सारांश

शिक्षा का अर्थ है ज्ञान प्राप्त करना जिसके माध्यम से हम अपने संस्कारों एवं व्यवहार का नियंत्रण करते हैं शिक्षा हमें इस योग्य बनाती है कि हम अपने वातावरण में समायोजित होकर अपनी क्षमताओं व योग्यताओं का पूर्ण विकास कर अपने परिवार समाज व राष्ट्र के किसी विशेष क्षेत्र में योगदान कर सकें। सन 2020 में कोविड-19 एक वैश्विक महामारी के रूप में उभरा तथा इसका सबसे अधिक प्रभाव विद्यार्थियों पर पड़ा, जिसके फल फल स्वरुप उनकी शिक्षा व्यवस्था का स्वरूप ही बदल गया। भारत में कोविड-19 महामारी का प्रभाव शिक्षा व्यवस्था पर सबसे अधिक महसूस किया गया। महामारी के बाद स्कूलों का पारंपरिक रूप से खोलना असंभावित था अतः ऑनलाइन शिक्षण का सहारा प्रत्येक स्तर के विद्यार्थियो के लिए लिया गया | इस शोध का उद्देश्य ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के सरकारी व गैर सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में पढ़ने वाले छात्रों एवं छात्राओ के अभिभावकों का ऑनलाइन शिक्षण की गतिविधियों के प्रति दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन करना था अर्थात अभिभावक ऑनलाइन शिक्षण के समर्थन में है या नही ये जानना था | जिसके निष्कर्ष में यह पाया गया की प्राइमरी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियो के अभिभावकों का ऑनलाइन शिक्षण के प्रति दृष्टिकोण एकसमान नही है | कुछ अभिभावक ऑनलाइन शिक्षण को महामारी के चलते एक अच्छा विकल्प मान रहे है किन्तु कुछ अभिभावक ऑनलाइन शिक्षण को स्कूल द्वरा फीस लेने का जरिया बता रहे है| कुछ अभिभावक ऑनलाइन शिक्षण के लिए आवश्यक सामग्री खरीदने में सक्षम नही हो पाए अतः ऑनलाइन शिक्षण उनके लिए व्यर्थ रहा | ऑनलाइन शिक्षण को प्रभावी बनाने के लिए अध्यापको का प्रशिक्षित होना व सभी सुविधाओ का उपलब्ध होना आवश्यक है तथा सरकार को भी ग्रामीण क्षेत्रो के लिए व आर्थिक रूप से निम्न परिवारों के लिए योजनाए बनानी चाहिए | ऑनलाइन शिक्षण को रोचक बनाने के लिए अध्यापको को पाठ्यक्रम रोचक तरीके से विद्यार्थियो के समक्ष प्रस्तुत करना चाहिए |

मूल शब्द : **कोविड 19, ऑनलाइन शिक्षण, प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियो**

प्रस्तावना : शिक्षा छात्रों को राह दिखाने का कार्य करती है तथा छात्रों में सही व गलत में फर्क करना सिखाती है | यह छात्रों को समाज के साथ समायोजन करने में भी उनकी सहायता करती है। शिक्षा छात्रों को समस्या समाधान करने में उनकी सहायता करती है तथा उनके अन्दर विभिन्न कोशल पैदा करती है | शिक्षा के द्वारा समाज को सभ्य समाज में परिवर्तित किया जाता है| शिक्षा द्वारा ही समाज की जरूरतों का आभास होता है जिसके अनुसार बदलाव किया जाता है | शिक्षा , सामाजिक परिवर्तन को सही दिशा प्रदान करने का भी कार्य करती है। **शिक्षा मनुष्य को मनुष्यता के आदर्शों तथा कर्मों का ज्ञान कराकर समाज उपयोगी बनाती है शिक्षा द्वारा मनुष्य की आंतरिक व बाह्य शक्तियों का विकास होता है।** **(पाल.संजयकुमार.)** शिक्षा में तकनीकी का उपयोग पुराने समय से चला आ रहा है किंतु कोविड-19 महामारी के दौरान तकनीकी माध्यमों की सहायता से शिक्षण प्रक्रिया को ऑनलाइन शिक्षण द्वारा सुचारू रूप से चलाने में मदद मिली है।

11 मार्च 2020 को विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा महामारी घोषित किए गए संक्रमण कोविड-19 ने भयानक परिदृश्य ग्रहण कर लिया था। **देशव्यापी तालाबंदी के आग्रह को कई देशों द्वारा महसूस किया गया था तथा सीमाओं को सील कर दिया गया था लंबे लॉक डाउन के कारण भारतीय अर्थव्यवस्था व शिक्षा व्यवस्था पर कोविड-19 विनाशकारी प्रभाव छोड़ रहा था।** **(मैती.एटअल, 2021)।** कोविड-19 महामारी के कारण शिक्षण की प्रक्रिया बाधित हो गई थी | सभी व्यवस्थाए अस्त-व्यस्त हो गयी थी| ऐसी स्थिति में शिक्षा व्यवस्था को ऑनलाइन शिक्षण के सहारे चलाने का प्रयास किया गया। ऑनलाइन शिक्षण ने शिक्षा व्यवस्था को

एक नया स्वरूप प्रदान किया है। शिक्षण प्रक्रिया मे तकनीकी का प्रयोग तो पहले से ही हो रहा है किंतु कोविड-19 महामारी के चलते ऑनलाइन शिक्षण के माध्यम से तकनीकी का प्रयोग और अधिक बढ़ गया है। शिक्षक तथा विद्यार्थी दोनों ही तकनीकी का उपयोग करने में सफल रहे हैं किंतु ऑनलाइन शिक्षण के प्रभाव से बच्चे मोबाइल का अधिकाधिक प्रयोग करने लगे हैं तथा सभी अभिभावक ऑनलाइन शिक्षण से खुश नहीं है। कुछ अभिभावकों को काफी समस्याओं का सामना करना पड़ा जिसकी वजह से वे कक्षा शिक्षण को ही ज्यादा उचित बता रहे हैं। अभिभावकों के इस दृष्टिकोण में जो अंतर देखने को मिला है उसके आधार पर ऑनलाइन शिक्षण के लाभ व हानियां सामने आई हैं। कोविड-19 के दौरान जो ऑनलाइन शिक्षा दी जा रही थी उसके प्रति अभिभावकों के अलग-अलग विचार थे। इन विचारों के कारण लोगों में मतभेद था | कुछ लोग खुश थे कि उनका बच्चा उनकी देखरेख में सीख रहा है किंतु कुछ अभिभावक परेशान भी थे क्योंकि उनको ऑनलाइन शिक्षा की जानकारी नहीं थी या वह अशिक्षित थे। इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए तथा सत्यता की जांच करने के लिए इस शीर्षक पर शोधार्थी ने अध्ययन किया |

अध्ययन की परिसीमा-

प्रस्तुत शोध अध्ययन में मेरठ जिले के ग्रामीण व शहरी, सरकारी तथा गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियो के अभिभावक को शोध अध्ययन के लिए लिया गया है।

शोध की सीमाए :

प्रस्तुत अध्ययन में मेरठ जिले के दस शहरी [पांच सरकारी व पांच गैर सरकारी] विद्यालय व दस ग्रामीण [पांच सरकारी व पांच गैर सरकारी] विद्यालयों को सम्मलित किया गया है | प्रत्येक विद्यालय से पांच छात्र व पांच छात्राओ के अभिभावकों को चुना गया है | इस प्रकार अध्यन में 200 विद्यार्थियो के अभिभावकों को सम्मलित किया गया है |

शोध सांख्यिकीय विधिय

प्रस्तुत अध्ययन को पूर्ण करने के लिए काई –वर्ग परिक्षण का प्रयोग किया गया है | काई-वर्ग , परिक्षण प्रयोग द्वारा प्राप्त परिणामो की किसी सैधान्तिक परिकल्पना के आधार पर प्रत्याशित परिणाम के साथ तुलना करने की एक महत्वपूर्ण विधि है |

प्रदत्तो का विश्लेषण , प्रस्तुतीकरण व विवेचन -

उद्देश्य - ग्रामीण क्षेत्र के सरकारी व गैर सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में पढ़ने वाले छात्रों के अभिभावकों का ऑनलाइन शिक्षण की गतिविधियों के प्रति दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पना - ग्रामीण क्षेत्र के सरकारी मैं गैर सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में पढ़ने वाले छात्रों के अभिभावकों का ऑनलाइन शिक्षण की गतिविधियों के प्रति दृष्टिकोण में कोई सार्थक अंतर नहीं है |

उत्तरदाता की प्रकृति	सहमतता क्षेत्र	पूर्ण सहमत	सहमत	तटस्थ	असहमत	पूर्ण असहमत	काई का मान	स्वतान्त्रंश का मान	सार्थकता स्तर
अभिभावक	सरकारी	342	296	85	225	177	14.17	4	0.05 पर
अभिभावक	गैरसरकारी	321	323	129	199	153			सार्थक

उपरोक्त सारणी में उद्देश्य नंबर वन परिकल्पना नंबर वन के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्र के सरकारी व गैर सरकारी प्राथमिक विद्यालय के छात्रों के अभिभावकों का ऑनलाइन शिक्षण के प्रति दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है जिसमें काय स्क्वायर का गणना आत्मक मान 14.17 पाया गया है जो स्वतंत्रताश 4:00 सार्थकता स्तर 0.05 के सारणी महान से अधिक है अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकार की जाती है।उपरोक्त विवेचन के आधार परअध्ययनकर्ती इस निष्कर्ष पर पहुंची है कि ग्रामीण सरकारी व गैर सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में पढ़ने वाले छात्रों के अभिभावकों का ऑनलाइन शिक्षण की गतिविधियों के प्रति दृष्टिकोण में सार्थक अंतर है |

उद्देश्य -शहरी क्षेत्र के सरकारी व गैर सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में पढ़ने वाले छात्रों व छात्राओ के अभिभावकों का ऑनलाइन शिक्षण की गतिविधियों के प्रति दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकलपना – शहरी क्षेत्र के सरकारी व गैर सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में पढने वाले छात्रों व छात्राओ के अभिभावकों का ऑनलाइन शिक्षण की गतिविधियों के प्रति सार्थक अंतर नही है |

उत्तरदाता की प्रकृति	सहमतता क्षेत्र	पूर्ण सहमत	सहमत	तटस्थ	असहमत	पूर्ण असहमत	काई का मान	स्वतान्त्रंश का मान	सार्थकता स्तर
छात्राओके अभिभावक	सरकारी	329	277	154	192	173	26.8	4	0.05 पर
छात्राओके अभिभावक	गैरसरकारी	312	264	125	286	138			सार्थक है

उपरोक्त सारणी में उद्देश्य नंबर दो तथा परिकल्पना नंबर दो के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्र के सरकारी व गैर सरकारी प्राथमिक विद्यालय में पढ़ने वाली छात्राओं के अभिभावकों का ऑनलाइन शिक्षण की गतिविधियों के प्रति दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है जिसमें काय स्क्वायर का गुणात्मक मान 26.8 पाया गया है जो कि स्वतंत्र अंश 4 पर तथा सार्थकता स्तर 0.05 पर सारण ईमान से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकार की जाती है।

अध्ययन करती द्वारा अपने शोध अध्ययन के विश्लेषण व सांख्यिकीय विधियों द्वारा जो परिणाम प्राप्त हुआ है वह निम्नलिखित है।

शोध के निष्कर्ष -

- ग्रामीण क्षेत्र के सरकारी व गैर सरकारी प्राथमिक विद्यालय में पढ़ने वाले छात्रों व छात्राओ के अभिभावकों का ऑनलाइन शिक्षण की गतिविधियों के प्रति दृष्टिकोण में अंतर पाया गया है क्योंकि सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों व छात्राओ के अभिभावक ऑनलाइन शिक्षण के प्रति उतनी क्रियाशील नहीं हो पाए हैं जितने की गैर सरकारी विद्यालयों मैं अध्ययनरत विद्यार्थियो के अभिभावक। ऑनलाइन शिक्षण को गैर सरकारी विद्यालयों ने सरकारी प्राथमिक विद्यालयों की अपेक्षा जल्दी आत्मसात कर लिया था तथा तकनीक और तकनीकी का उपयोग भी गैर सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में अधिक हुआ है क्योंकि गैर सरकारी प्राथमिक विद्यालय विद्यार्थियों के अभिभावकों द्वारा दी जाने वाली फीस पर निर्भर होते हैं तथा बिना शिक्षण के अभिभावक फीस देना पसंद नहीं कर रहे थे इस कारणवश उन्होंने ऑनलाइन शिक्षण को जल्दी ही आत्मसात कर लिया था।

शहरी क्षेत्र के सरकारी व गैर सरकारी प्राथमिक विद्यालय में अध्ययनरत छात्राओं वछात्रों के अभिभावकों का ऑनलाइन शिक्षण की गतिविधियों के प्रति दृष्टिकोण में अंतर पाया गया है क्योंकि सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियो के अभिभावक गैर सरकारी विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियो के अभिभावकों की तुलना में अधिक उदासीन रहते हैं तथा छात्रों पर अधिक खर्च करना नहीं चाहते हैं जबकि ऑनलाइन शिक्षण की सामग्री खर्चीली होती है।

सुझाव

- सरकारी विद्यालयों में शैक्षिक गतिविधियों के लिए तकनीकी प्रयोग पर अधिक जोर दिया जाना चाहिए तथा विद्यार्थियों को भी तकनीकी के प्रयोग के लिए प्रेरित करना चाहिए तकनीकी के प्रयोग से शैक्षिक गतिविधियों को रोचक बनाना चाहिए ताकि विद्यार्थियों में रुचि जागृत हो सके । ऑनलाइन शिक्षण की विधियों व महत्व से अभिभावकों को भी परिचित कराना चाहिए।
- छात्रों के लिए प्रत्येक सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय में तकनीकी शिक्षण की उचित व्यवस्था होनी चाहिए तथा विद्यार्थियों को कंप्यूटर का ज्ञान उचित प्रकार से दिए जाने की व्यवस्था होनी चाहिए।विद्यार्थियोंके तकनीकी शिक्षण के लिए प्रशिक्षित अध्यापक की व्यवस्था की जानी चाहिए। समय-समय पर विद्यार्थियों के तकनीकी विकास का मूल्यांकन भी किया जाना चाहिए।
- विद्यार्थियों के लिए वर्तमान में चल रहे विभिन्न ऑनलाइन कार्यक्रमों का सहारा लेना चाहिए जैसे कि अभिक्रमित अनुदेशन जिसके द्वारा विद्यार्थी धीरे-धीरे एक के बाद एक मुख्य बिंदुओं को समझता जाता है तथा लाभान्वित होता है। इस प्रकार के कार्यक्रमों का विद्यार्थियों के लिए आयोजन समय-समय पर विद्यालय द्वारा किया जाना चाहिए
- सरकारी विद्यालयों के अध्यापकों को ऑनलाइन शिक्षण का उचित प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए तथा प्राइमरी सरकारी विद्यालयों में तकनीकी शिक्षण की उचित व्यवस्था भी की जानी चाहिए।

- शहर से दूर स्थित गांव में तकनीकी के प्रयोग के लिए शिक्षण हेतु सरकार को भी उचित व्यवस्था करनी चाहिए ताकि गांव के विद्यार्थी भी कठिन परिस्थितियों में ऑनलाइन शिक्षण से लाभान्वित हो सके। भविष्य आवश्यकता पड़ने पर ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थी भी शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थियों की भांति ऑनलाइन शिक्षण का लाभ उठा सकें तथा कठिन परिस्थितियों में अपनी व्यवस्था को सुचारू रूप से चला सके।
- तकनीकी सामग्रियों का खर्च बहुत अधिक होता है अतः प्रत्येक अभिभावक इसे वहन करने में असमर्थ होता है अतः सरकार को इस समस्या के समाधान पर भी विचार विमर्श करना चाहिए क्योंकि समाज में प्रत्येक वर्ग के मनुष्य रहते हैं तथा प्रत्येक व्यक्ति ऑनलाइन शिक्षण सामग्री का खर्च उठाने की स्थिति में नहीं होता है।

सन्दर्भ सूचि –

कियानसन, चेन. [2016]. ऑनलाइन शिक्षा और इसका प्रभावी अभ्यास एक शोध समीक्षा सूचना प्रौद्योगिकी जर्नल ,अनुसंधान 15 (2016): 157 -141.

पलगिया ,एरोन, बाल, फरीदा, रोजनर. [2018]. ऑनलाइन शिक्षा दुनियाभर में स्थित चुनौतियां रुझान और निहितार्थ वैश्विक सूचना प्रौद्योगिकी प्रबंधन जर्नल, 21(4).

अख्तर, महमूद. [2019]. विश्वविद्यालय स्तर पर छात्रों की शिक्षा पर ऑनलाइन शिक्षा के प्रभाव का अध्ययन शिक्षा और शिक्षा का अंतरराष्ट्रीय जर्नल, 3(2).

कुलाल, नायक [2020]. दक्षिण कन्नड़ और उडुपी जिले में ऑनलाइन शिक्षण कक्षाओं के प्रति शिक्षक और छात्रों की धारणा पर एक अध्ययन एशियन एसोसिएशन ऑफ़ ओपन यूनिवर्सिटी जर्नल, 15(3).

नायक, देशपांडे, शिव नंदा , पटेल [2020]. भारत में कोविड-19 के समय आपातकालीन लॉकडाउन के समय उच्च शिक्षा का ऑनलाइन शिक्षण में सीखना इंटरनेशनल जर्नल आफ फिजिकल रिसर्च, 6(1).

मुख्तार, जावेद, सेठी [2020]. कोविड-19 महामारी के दौर में ऑनलाइन सीखने के लाभ, सीमाएं और सिफारिशें पाकिस्तानी जनरल ऑफ मेडिकल साइंसेज, 6(3).

अलमेडिंगन, मोरसेथ, गाल्सटैड, ब्रेविकपोलिस [2021]. कोविड-19 लॉकडाउन के बाद ऑनलाइन शिक्षण के साथ छात्रों के अनुभव एक मिश्रित तरीके खोजपूर्ण अध्ययन प्लस वन ,16(8).

अल्महसीस, मोहसीन, अमीन. [2021]. कोविड-19 के दौरान ऑनलाइन सीखने के संकाय और छात्रों की धारणा फ्रंट टायर एजुकेशन जर्नल, वॉल्यूम 6

गोपाल , सिंह, अग्रवाल. [2021]. कोविड-19 महामारी के दौरान छात्रों की संतुष्टि और प्रदर्शन पर ऑनलाइन कक्षाओं का प्रभाव एक्सेस जर्नल, वॉल्यूम 121.

गोस्वामी, एमपी. [2021]. भारत में ऑनलाइन शिक्षण का प्रभाव कोविड-19 संकट के दौरान विश्वविद्यालय के छात्रों का एक सर्वेक्षण एशियन जर्नल फॉर पब्लिक ऑपिनियन, 9(4)

International Research Journal
IJNRD
Research Through Innovation